

श्रीललितकुमारदास वरीयवैज्ञानिकसहप्रधान कृषिविज्ञानकेंद्रधनबाद

डॉसीमासिंह वैज्ञानिकहोमसाइंस कृषिविज्ञानकेंद्रधनबाद

-: बकरी पालन पालन से दिखाई आर्थिक शक्ति की राह :-



किसी भी काम को महत्वपूर्णसमझने एवम पूर्ण लगन से मन लगाकर काम करने वाले लोग ही सफलता की कहानी रचते है। धनबाद जिला निरसा प्रखण्ड के सुदूर गाँव श्यामपुर के रहने वाले सुरेन्द्र पासवान ने 4 वर्षपहले 40,000 रुपये में 10 बकरियाँ खरीदी थी, और इसे अपने रोजगार का साधन बनायाक्योंकि उनका घर जंगल के किनारे है जहां उनके बकरियों के लिए चारागाह उपलब्ध हो रहा था। बकरी पालन के लिए एक अच्छा संसाधन उपलब्ध था। इस लिए उन्होंने बकरी पालन का व्यवसाय चुना। बकरी पालन के साथ-साथ सुरेंद्र पासवान ने खेती- बारी पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, धनबाद में जा कर खेती-बारी एवं बकरी पालन के गुर को सिखा । उनका कहना था कि हमारा परिवार बाप-दादा सेखेती-बारी पर ही निर्भर है लेकिन जितना उत्पादन धान की खेतीसे होना चाहिए उतना उत्पादन नहीं होता है । सुरेन्द्र पासवान का परिवार वर्षभर में

केवल धान का ही खेती करता आ रहा था। इस लिएउनका कहना था की मुझे खेती-बारी के गुरभी सीखना हैजिससे मुझे अधिक आय की प्राप्ति हो सके। कृषि विज्ञान केन्द्र धनबाद से प्रशिक्षण के उपरान्त अब सुरेन्द्र पासवान धान के अलावा सब्जी की भी खेती करते हैं साथ-ही-साथ चारा उत्पादन एवं बकरी पालन पर इनका ज्यादा रुचि है और इस व्यवसाय सेउन्हें सालाना 2.0 लाख से 2.50 लाख तक आमदनी प्राप्त होता है। अभी इनके पास लगभग 40 बकरीयाँ है। इनके अनुसार 1 बकरी एक साल में दो बार बच्चे देती है। कोई एक तो कोई दो बच्चे भी देती है इस प्रकार वर्ष भर में औसतन 60 से 80 बच्चे का जन्म होता है 1 बच्चे 7000 रुपयेसे 8000रुपये में बिक्री होता है साथ-ही-साथ चारा भी बिक्रीहोता है जो अपने बकरीयों को खिलाने के बाद बच जाता है इस प्रकार छोटे-छोटे कामों के द्वारा सुरेन्द्र अपनी एवम अपने परिवार की ज़िन्दगी खुदसवार रहे है। सुरेन्द्र पासवान के लगन एवम बकरी पालन को देखकर अगल-बगल के किसान भी प्रोत्साहित हो रहे हैं।वर्ष 2025 में महामहिम राज्यपाल झारखण्ड श्री संतोष गंगवार द्वाराबकरी पालन एवं चारा उत्पादनमें इन्हे सम्मानित किया गया।अब दूसरे कृषक भी बकरी पालन करना चाह रहे रहे है। सुरेन्द्र पासवान अब अन्यकिसाने के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गये है।

